सभी सो जाते तो मैं बैठकर बाबा (भगवान) से बातें करता कि बाबा, मैं अकेला पड़ गया हूँ, सभी मेरे खिलाफ हैं। उस समय मुझे एहसास होता कि सर्वशक्तिवान बाबा मुझमें अपनी सारी शक्तियाँ भर रहे हैं और कह रहे हैं कि जब तक मैं तेरे साथ हूँ, संसार की कोई शक्ति बाल बांका नहीं कर सकती। फिर तो मेरा सारा डर खत्म हो गया।

यह दिव्य आत्मा है

एक बार मेरे चाचा ने मुझे प्रभावित करने के लिए ऋद्धि-सिद्धि के चमत्कार भी दिखाये परंतु मैंने कहा, चमत्कार कोई बड़ी बात नहीं है, इससे हम किसी को प्रभावित तो कर सकते हैं परंतु मन की सच्ची शान्ति व सच्चा सुख नहीं प्राप्त कर सकते। सच्ची शान्ति व सच्चा सुख प्रभु को सत्य रूप में पहचान कर, उसके साथ आत्मिक संबंध जोड़ने से ही प्राप्त हो सकता है। कुछ दिनों बाद चाचाजी ने मुझे बताया कि मैंने तुम्हारी बुद्धि को बदलने के लिए अर्जी लगाई थी परंतु **मेरे गुरुजी ने सम्मुख प्रकट होकर कहा कि इसके मार्ग में नहीं आओ, यह एक दिव्य आत्मा है और सही मार्ग पर है। प्यारे बाबा ने उसको मेरे द्वारा प्रकाशमय रूप भी दिखाया, उन्होंने ऐसा बताया।**

योग के सुन्दर अनुभव

एक बार मैंने बाबा को कहा, बाबा, मैं बहुत बंधनों में हूँ, मधुबन जाना तो दूर, आश्रम जाना भी मुश्किल है। **उस रात ब्रह्मा बाबा मेरे स्वप्न में आये और सारी रात मुझे अंगुली पकड़कर मधुबन घुमाया। अगली रात फिर स्वप्न में अव्यक्त बापदादा आये और दृष्टि देकर टोली दी। एक दिन दोपहर विश्राम के बाद मैंने जैसे ही आँखें खोलीं तो जैसे सारा कमरा लाल प्रकाश से भरा हुआ था और एक बहुत ही तेजोमय ज्योति मेरी आँखों के सामने किरणें बिखेर रही थी। ऐसा 10 सेकंड के लिए हुआ पर उस शक्ति का अनुभव अगले दिन तक रहा। एक बार बाबा को भोग स्वीकार कराने बैठा तो ऐसा महसूस हुआ जैसे कि आत्मा ने शरीर छोड़ दिया है और ऊपर जा रही है। लगभग बीस मिनट बाद मम्मी ने आवाज़ लगाई तो ऐसे लगा जैसे कोई नीचे से आवाज मार रहा है और आत्मा ने शरीर में प्रवेश कर लिया। ऐसे कई अनुभव बाबा ने मुझे कराये जिससे योग की लगन अधिक बढ़ती गई।**

बाबा ने मुझे नया जीवन दिया

मैं कोटकपूरा से फरीदकोट पढ़ने के लिए प्रतिदिन जिस बस द्वारा जाता था, उसमें चढ़ने से मुझे किसी ने (बाबा की टचिंग ने) ज़बरदस्ती रोक लिया। मैं बाद में आई एक अन्य बस में बैठा। आगे जाकर देखा कि पहले वाली बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई है। दुर्घटना में, आगे बैठे चार-पाँच की तुरंत मौत हो गई, कई गंभीर रूप से घायल हो गये। मैं भी हमेशा बस में आगे ही बैठता था। यह दुखदायी दृश्य देख मेरी आँखों में बाबा के प्रति प्यार के आँसू आ गये। मैंने कहा, बाबा, इस दुर्घटना से मुझे बचाकर मानो आपने मुझे नया शरीर दिया है। अब मुझे आपसे मिलने से कोई नहीं रोक सकता। उसी समय जैसे एक नई शक्ति ने शरीर में प्रवेश किया। आँखों की एलर्जी भी बाबा से दृष्टि लेते-लेते ठीक हो गई। अब तो शिवबाबा की लाइट की ओर देखने से भी पानी नहीं आता है और आँखें भी ठीक रहने लगी हैं।

यह कभी भूखा नहीं मर सकता

वह समय भी आया जब युक्ति से सारे बंधन खत्म हो गये। अब मैं सुबह-शाम आश्रम में ज्ञानामृत पान के लिए जाता हूँ। अव्यक्त बापदादा से कई बार मधुर मिलन मना चुका हूँ। परिवार के सभी सदस्य सहयोगी हैं और मेरे इस पवित्र जीवन को अब पसंद करते हैं। मेरे दादा जी, पहले मेरे पापा को कहते थे, आप समझ लो कि आपका यह बच्चा मर चुका है। अब कहते हैं, मेरे सभी पौत्रों में यह ही सबसे अच्छा है। पहले मेरे पापा कहते थे, यह ब्रह्माकुमारियों के पीछे लगा है इसलिए कहीं का नहीं रहेगा, कमाकर भी नहीं खायेगा। अब मैं खुद का कंप्यूटर सेन्टर चलाता हूँ और घर की सारी ज़िम्मेवारियाँ संभालता हूँ। अब पापा कहते हैं, यह कभी भूखा नहीं मर सकता। इस तरह भगवान ने भक्ति स्वीकार की और उसके सच्चे फल के रूप में स्वयं ही मुझे मिल गये। ❖